ओ३म्

आर्य्य मार्तण्ड

❖❖ आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक ❖❖

वैदिक संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प – आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क, जयपुर

वर्ष: 87 अंक 13
चेत्र कृष्ण दसमी
विक्रम संवत 2069
कलि संवत 5115
5 अप्रैल से 21 अप्रैल 2013 तक
दयानन्दाब्द 189
सृष्टि सम्वत् 1, 96, 08, 53, 113

मुख्य सम्पादक :
पं. अमर सिंह आर्य, 9214586018
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान

संपादक मंडल:
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री सत्यव्रत सामवेदी
श्री बलदेव राज आर्य
आर्य शिरोमणि पं. विनोदी लाल दीक्षित
श्री हरिपाल शास्त्री, अलवर
श्री ओम प्रकाश विद्यावाचस्पति
श्रीमती सरोज वर्मा
श्रीमती अरूणा सतीजा
श्री सत्यपाल आर्य
श्री बृजेन्द्र देव आर्य

प्रकाशक:
आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान
राजापार्क, जयपुर
दूरभाष- **0141-2621879**

प्रकाशन: दिनांक 1 व 15

पत्र व्यवहार का अस्थाई पता
अमर मुनि वानप्रस्थी
सम्पादक आर्य मार्तण्ड, सेढ़ का टीला
केडलगंज, अलवर (राज.)
मोबाईल- 9214586018

मुद्रक:
राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशियेट्स,जयपुर

ग्राफिक्स :
भार्गव प्रिन्टर्स, दारूकूटा, अलवर
Email: bhargavaprinters@gmail.com
Email:aryamartand@gmail.com

एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया

हमारी पुकार

आ घां गमद्यदि श्रवंत् सहस्त्रिणींभिरूतिभिः। वाजेभिरुपं नो हवम्।।

ऋ० १।३०।८: साम० उ० १।२।२१२: अथर्व० २०।२६।२

ऋषिः-**आजीगर्तिः शुनःशेषः।।** देवता-**इन्द्रः।।** छन्दः-**निचृद्गायत्री।।**

विनय-वह आ जाता है, निश्चय से आ जाता है, हमारे पास प्रकट हो जाता है यदि वह सुन लेवे। बस, उसके सुन लेने की देर है। उस तक अपनी सुनवाई करना, अपनी रसाई करना बेशक कठिन है। उस तक हमारी पुकार पहुँच जाए, इसके लिए हममें कुछ योग्यता चाहिए, हममें कुछ सामर्थ्य चाहिए, पर इसमें कुछ सन्देह नहीं है कि वह परमात्मदेव यदि पुकार सुन लेवे, यदि हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर लेवे तो वह निश्चय ही आ जाता है-और तब वह आता है अपनी सहस्त्रों प्रकार की रक्षा-शक्तियों के साथ हमारी रक्षा के लिए मानो वह अनन्त महाशक्ति-सेना के साथ आ पहुँचता है। हमारी रक्षा के लिए तो उसकी ज़रा-सी शक्ति भी बहुत होती है, पर तब यह पता लग जाता है कि उसकी रक्षा-शक्ति असीम है। वह हमारे 'हव' पर-पुकार कर अपने 'वाज' के साथ (अपने ज्ञान-बल के साथ) आ पहुँचता है। वह पीड़ितों की रक्षा कर जाता है और हम अज्ञानान्धकार में ठोकरें खाते हुओं के लिए ज्ञान-प्रकाश चमका जाता है, पर यदि वह सुन लेवे। कौन कहता है कि वह सुनता नहीं? बेशक, हमारी तरह उसके कान नहीं, पर वह परमात्मदेव बिना कान के सुनता है। यदि हमारी प्रार्थना कल्याण की प्रार्थना होती है और वह सच्चे हृदय से, सर्वात्मभाव से की गई होती है तो उस प्रार्थना में यह शक्ति होती है कि वह प्रभु के दरबार में पहुँच सकती है। आह! हमारी प्रार्थना भी प्रभु के दरबार में पहुँच सके; हममें इतनी स्वार्थशून्यता, आत्मत्याग और पवित्रता हो कि हमारी पुकार उसके यहाँ तक पहुँच सके। यदि हमारी प्रार्थना में इतनी शक्ति हो, हम अन्धकार में पड़े हुए, दुःख-पीड़ितों, दुर्बलों के हार्दिक करुण-क्रन्दनों में इतना बल हो कि इन्द्र उसे सुन ले तो फिर क्या है! तब तो क्षण-भर में वे करुणासिन्धु हम डूबतों को बचाने के लिए आ पहुँचते हैं। बस, हमारी प्रार्थना उन तक पहुँचे, हमारी पुकार में इतना बल हो, तो देखो वे प्रभु अपने सब साज़-सामान के साथ, अपने ज्ञान, बल और ऐश्वर्य के भण्डार के साथ, अपनी दिव्य विभूतियों की फ़ौज के साथ हम मरतों को बचाने के लिए, हम निर्बलों में बल संचार करने के लिए आ पहुँचते है।

शब्दार्थ-यदि= यदि **नः हवम्**=हमारी पुकार **श्रवत्**=वह इन्द्र सुन लेवे तो वह **सहस्त्रिणीभिः ऊतिभिः**=अपनी सहस्त्रों बलशालिनी रक्षा-शक्तियों के साथ और **वाजेभिः**=सहस्त्रों ज्ञानबलों के साथ **घ**=निश्चय से **उपागमत्**=आ पहुँचता है।

नूतन वर्ष- चैत्र शुक्ल प्रतिपदा सम्वत् २०७०

आपके लिए मंगलमय एवं प्रेरणादायक हो।

-अमरमुनि

हे आत्मन! लिखना बहुत सरल है किन्तु लखना बहुत कठीन है। यदि लख करके लिखे तो लिखिना सार्थक है, बिना लिखे तो लिखना सार्थक है, बिना लखे लिखना मात्र शारीरिक श्रम ही है।

होलिका दहन क्यों?

संसार के समरांगण में जूझ रहे मनुष्यों को अथति् संसार रूपी दुःख सागर से जूझते हुए मानवों को नवीन स्फूर्ति व नूतन उल्लास प्रदान करने के लिए हर वर्ष पर्व अथति् त्यौहार आते है तथा हमारे अन्दर आलस्य या कोई कमजोरी हो तो उसे दूर हटाया करते है। भारत पर्वों का देश है। विश्व के अन्य देशों की अपेक्षा भारत में मनाए जाने वाले पर्वों की संख्या अधिक है। सर्वप्रथम तो पर्व शब्द का अर्थ ही आप पाठकगण समझ लीजिए-''पूरयति जनान् आनन्देन इति पर्वः'' अथति् जो लोगों में आनन्द को भर दे, खुशियों को भर दे वहीं पर्व है। भारतीय मनीषी व दर्शन शास्त्री मनुष्य के जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण रखते है। विष्णु शर्मा की विश्व विख्यात नीति-कथा पुस्तक 'पंचतन्त्र' में एक जगह श्लोक आता है - ''अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्। उदार चरितानाम् तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।''

यह मेरा है,यह पराया है, इस प्रकार का चिन्तन संकुचित व्यक्तियों का ही हो सकता है। किन्तु उच्च विचारों व भावनाओं वालों के लिए तो सम्पूर्ण भूमण्डल के प्राणी उनके कुटुम्ब अथति् परिवार के सदस्य है, सारा संसार उनका परिवार है। भारत में इस प्रकार के उच्च विचारों व आशावादी दृष्टिकोण के कारण ही यहाँ पर्वों की अधिकता है और इनको मनाने का उद्देश्य यह भी है कि हमारे अंदर सदैव उत्साह बना रहे और हम कर्तव्य कर्मो के प्रति सचेत रहते हुए समता बनाये रखे। भारतीय पर्वों में सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे प्रकृति व ऋतुओं पर आधारित है, ऋतुओं के परिवर्तन के साथ-साथ पर्व आते रहते है। जिनमें होली भी प्रसिद्ध है। इसे नवसस्येष्टि पर्व भी कहा जाता है। हिन्दुओं के पंचाग के अनुसार होली भारतीय सम्वत् वर्ष का अंतिम त्योहार है। यह फाल्गुन मास की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। तो आइए! इस पर्व के बारे में निम्न विषयों द्वारा और अधिक जानकारी प्राप्त करें -

होली के विषय में प्रचलित भ्रांतिपूर्ण कथा

होली भारत के प्रसिद्ध त्योहारों में से एक है। होली के विषय में प्रचलित कथा (पदम् पुराण उत्तर खण्ड अ० २३७ श्लोक ३२) के अनुसार इस प्रकार है एक हिरण्यकश्यपु नामक नास्तिक दैत्य हुआ है। उसकी बहन का नाम होलिका था, जिसे वरदान था कि वह आग में नहीं जलेगी। हिरण्यकश्यपु का पुत्र प्रहलाद आस्तिक, ईश्वर भक्त था। वह विष्णु काउपासक था और हिरण्यकश्यपु शिव का उपासक था। प्रहलाद को हिरण्यकश्यपु त्रिलोचन शिव की पूजा करने और विष्णु का शत्रु बताकर उसकी भक्ति न करने के लिए कहते थे। परन्तु प्रहलाद कहता था - कथं पाखण्डमाश्रित्य पूजयामि च शंकरम्। अथति् मैं पाखण्ड का आश्रय लेकर शंकर की पूजा क्यों करू? मैं तो विष्णु की ही पूजा करूँगा। (पदम पुराण उतरखण्ड श्लोक ४५) हिरण्यकश्यपु को अपने और अपने पुत्र के बीच की यह विषमता खटक रही थी इसलिए, उसने अपनी बहन होलिका से उसे गोद में लेकर आग में बैठने को कहा वह आग में बैठ गई और इस प्रकार होलिका जल गई और विष्णु का भक्त होने से प्रहलाद बच गया। होलिका की स्मृति में होली का त्यौहार प्रतिवर्ष मनाया जाता है जो नितान्त मिथ्या है। मन मनगढंत है।

समीक्षाः- कुछ लोग तथाकथित होली से सम्बन्धित कहानी को मिथ्या नहीं ईश्वर की कृपा मानते है। यदि यह कथा सत्य है तो बताओं कि यदि होलिका को अग्नि से न जलने वरदान प्राप्त था तो फिर भी वह जल क्यों जाती है? इससे पूर्व हिरण्यकश्यपु को अपने पुत्र को इस प्रकार छल, कपट से मारने की क्या आवश्यकता थी? वह तो निर्मम तानाशाह था। वह स्वयं उनकी हत्या कर सकता था अथवा करा सकता था। अतः घटनाक्रम जिस प्रकार मोड़ लेता है और फिर उसे होलिकोत्सव से जोड़कर देखने के लिए हमें प्रेरित और विवश किया जाता है वह न तो विश्वसनीय है और ना ही सत्य है। यह बात मिथ्या ही नहीं असम्भव भी है कि होलिका अग्नि में जल गई और प्रहलाद बच गया। क्योंकि अग्नि ऐसा तत्व है जिसका स्वभाविक गुण ही जलाना है अर्थात् अग्नि का धर्म जलाना है। उसमें जलने के लिए कोई भी बैठ जाए, चाहे वह आस्तिक हो अथवा नास्तिक, क्रूर हो अथवा दयावान, वरदानी हो अथवा अभिशापी और चाहे होलिका हो अथवा प्रहलाद। अग्नि का धर्म जलाना है तो वह तो जलाएगी ही। वह कभी अपने धर्म को नहीं छोड़ती। और भी अग्नि जड़ होने से यह नहीं जानती कि प्रहलाद आस्तिक है इसे न जलाऊ। जिस प्रकार सूर्य जड़ होने से अपना प्रकाश सम्पूर्ण संसार के जीवों को समान रूप से देता है। इसी प्रकार अग्नि भी कभी अपने धर्म से नहीं गिरती। चलो यदि मान भी ले कि 'प्रहलाद' बच गए और 'होलिका' जल गई। तो यह विचार करने की बात है कि भक्त प्रहलाद को होलिका द्वारा जलाने का प्रयास गलत था या सही। सही गलत था तो होलिका को माता क्यों कहते हैं और उसकी जय क्यों बोलते हैं? यदि जय ही बोलनी है तो महारानी लक्ष्मीबाई जैसी वीरांगना की जय बोलो जिसने देश धर्महित बलिदान दिया। इसके अलावा उस माता की पूजा अथवा सत्कार करो, जय बोलो जिसने अनेक कष्ट सह करके तुम्हें जन्म दिया। स्वयं गीले में सोकर तुम्हें सूखे में सुलाया और तुम्हारा पालन पोषण किया। भला होलिका ने तुम्हारे लिए क्या किया? किया तो सिर्फ अपने भतीजे 'प्रहलाद' को जलाने का प्रयास। फिर उसकी जयघोष क्यों? तुम्हारे बाप, दादा, परदादा इत्यादि मरने पर जहाँ जलाए गए उस स्थान का नाम श्मशान है। जहाँ होलिका जलकर भस्म हुई वह स्थान भी शमशान हुआ तो आप लोग कभी शमशान में अपने मरे हुए बाप-दादा इत्यादि की स्मृति में तो परिक्रमा देने नहीं गए उनकी तो कभी जयघोष नहीं की जब कि उन्होंने तुम्हारा पालन-पोषण किया, शिक्षा-दीक्षा में हर प्रकार प्रयास किया, तुम्हारा निर्माण किया, धन-सम्पत्ति तुम्हारे लिए छोड़ गए तब भी शमशान में कभी उनके लिए परिक्रमा व जयघोष नहीं करने गए तो होलिका ने तो तुम्हारे लिए किसी भी प्रकार का कोई सहयोग नहीं किया। फिर उसकी परिक्रमा व जयघोष क्यों करते हो? आइये मनगढ़ंत कहानी छोड़कर सत्य की खोज करें।

किसी भी अनाज के ऊपर की पर्त को होलिका कहते है। जैसे चना, मटर, गेहूँ, जौ की गिद्दी की उपर वाली पर्त। इसी प्रकार चना, गेहूँ, मटर, जौ की गिद्दी (गिरी) को प्रहलाद कहते हैं। होलिका को माता इसीलिए कहा जाता है क्यों कि वह चना इत्यादि का निर्माण व रक्षा करती है। 'माता निर्माता भवति' यदि यह पर्त अथति् होलिका न हो तो चना मटर रूपी प्रहलाद का जन्म नहीं हो सकता और भी जिस प्रकार माँ अपने बच्चे को किसी भी आपत्ति से बचा लेती है और यदि अग्नि में जलना भी पड़े तो बच्चे को बचाकर स्वयं को आहत करने के लिए तत्पर हो जाती है और अंदर की गिरी सुरक्षित रहती है अर्थात् प्रहलाद बच जाता है। उस समय प्रसन्नता से उस माता की जयघोष की जाती हैं। अतः प्रहलाद रूपी गिरी को बचाकर अपने को आहूत करने के कारण होलिका को माता कहा जाता है।

होली की पुरातन परंपरा एवं आधुनिक विकृत स्वरूप।

भारतवर्ष के प्राचीन समाज में होली मनाने की प्राचीन परंपरा से वर्तमान की यदि तुलना की जाये तो यह अत्यंत निम्न कोटि की ही परंपरा कही जायेगी। प्राचीनकाल में ऋषि लोग इस पावन पर्व पर विशाल यज्ञों का आयोजन किया करते थे। इन विशाल यज्ञों में सर्वजन कल्याणार्थ आहुतियाँ अर्पित की जाती

हे आत्मन्! लिखना भी बहुत लाभदायक है, यदि वह दूसरे के लेखने में कारण बन सके तो।

थी। यही विशाल यज्ञ धीरे-धीरे सारे गाँवों और नगरों के सामूहिक यज्ञ बन गये। पुनश्चः इन सामूहिक यज्ञों ने पुराणकाल के भारतीय पतनकाल में होलिका दहन का स्वरूप लिया। इस काल में भी यह बात अच्छी रहीं कि सारा गांव एक ही होलिका का दहन करता था कोई ब्राह्मण कुछ न कुछ मंत्रों का उच्चारण कर वातावरण को अच्छा बनाने का प्रयत्न करता था। इसके पश्चात् यह प्रक्रिया भी क्षीण से क्षीणस्तर होती चली गयी। जिसने आज का विकृत और घिनौना स्वरूप ले लिया। आजकल तो गांवों में सारे गांव की एक होली नहीं जलती, अपितु मुहल्ले-मुहल्ले की अलग-अलग होली जलती है। यह प्रवृति हमारी विखंडित सोच की सूचक है। कृति में विखंडन, वृत्ति के विखण्डन का परिणाम है। होली तो समाजवाद की दिशा में हमारे ऋषि पूर्वजों द्वारा उठाया गया एक सराहनीय पग था। आज यह पर्व समाजवाद के स्थान पर विघटन के बीज बो रहा है। व्यक्ति ईर्ष्या और द्वेष की घृणित वृत्ति को इस पर्व पर सराहनीय पग था। आज यह पर्व समाजवाद के स्थान पर विघटन के बीज बो रहा है। व्यक्ति ईर्ष्या और द्वेष की घृणित वृत्ति को इस पर्व पर सराहनीय पग था। आज यह पर्व समाजवाद के स्थान पर विघटन के बीज बो रहा है। व्यक्ति ईर्ष्या ओर द्वेष की घृणित वृत्ति को इस पर्व पर अग्नि को समर्पित कर हृदय की शुद्धता और पवित्रता पर ध्यान केन्द्रित करता था। इस प्राचीन परंपरा के स्थान पर आजकल व्यक्ति ईर्ष्या और द्वेष के सर्प को पूरे वर्ष दूध पिलाता है और होली आने तक उसे पूर्ण रूपेण पाल-पोसकर नवयुवक बना डालता है। यौवन की मदोन्मत्तता उसे किसी से गले मिलने को नहीं अपितु किसी का गला काटने के लिए प्रेरित करती है। अतः आज के दूषित परिवेश में इस पर्व की पावनता को मानव की प्रतिशोध की भावना ने इस प्रकार विषैला बना डाला है। यह पर्व हमें तोड़ने की नहीं जोड़ने की शिक्षा देता है। इसीलिए हे मानव! गला काटने का घिनौना खेल छोड़, इस पर्व के माध्यम से सामाजिक समरसता की स्थापना में सहायक बन। इसी से तेरे जीवन का कल्याण होगा।

होली का वास्तविक स्वरूप एवं वैज्ञानिक रहस्य:- इस पर्व का प्राचीनतम नाम वासन्ती नव सस्येष्टि वासन्ती = वसन्त ऋतु में, नव = नये, सत्य = अनाज, येष्टि = यज्ञ। उदाहरण स्वरूप ऐतिहासिक ग्रंथ रामायण के कुछ विशेष तथ्य जिनमें मिलावट की गई है यहाँ बताता हूँ :- ''सीता जी की माता का नाम 'सुनैना धरणी' थी।'' मगर कुछ धूर्त पेटार्थी ब्राह्मणों के द्वारा धरनी की जगह 'धरती' करके जनकपुत्री सीता को गाजर, मूली की तरह धरती से उत्पन्न बताकर इतिहास की हत्या कर दीगई। इसी प्रकार हनुमान की माता अंजना व पिता पवन बिना पूँछ के थे वीर हनुमान की सर्वत्र पूछ को पूँछ बताकर 'बन्दर' बना दिया। जो पृथ्वी से 13 लाख गुणा बड़ा सूर्य मुख में निगल गया। इसी प्रकार चार वेद छः शास्त्रों के ज्ञाता होने के कारण महाबली रावण को 'दशानन' की उपाधि से सुशोभित किया गया था। लेकिन यहाँ भी धूर्तो ने दशानन का अर्थ दशमुख वाला कर दिया। इस प्रकार होली शब्द का प्रयोग 'होलक' शब्द को बिगाड़ कर किया गया है। इसके साथ-साथ 'होलिका' हिंदू पंचांग के अनुसार वर्ष का अंतिम पर्व है, तो इसका हिंदू संवत् में वर्ष का अंतिम पर्व होना और इसे समाज में परंपरानुसार होली कहना इसके एक अन्य गूढ़ आर्थ और कारण की ओर भी हमारा ध्यान आकृष्ट करता है। इस पर्व पर जो यज्ञ किया जाता था उसमें हमारे पूर्वज लोग, विशेषतः हमारे ऋषिगण हमसे अपने पूरे वर्ष के गलत कार्यों का प्रयाश्चित भी कराया करते थे। जिसके अनुसार उन गलत कार्यों की नववर्ष में पुनरावृत्ति न हो इस भाव से यज्ञ में आहुति दी जाती थी। गलती अब तक जो होनी थी सो हो ली अब भविष्य में ऐसा नहीं होगा, यह भावना गुप्त रूप से कार्य करती थी। इसलिए भी इस पर्व को होली कहा जाने लगा। लोकाचार में प्रचलित भी है कि जो 'होली सो होली' अर्थात जो कुछ भी वर्ष भर में आपस में मनमुटाव अथवा वैरभाव था। उसे दिल से निकालकर परस्पर प्रेम की भावना जागृत करें। सदाचार, समरसता आदि मानवीय भाव हमारे जीवन का आभूषण हो जिस प्रकार पेड़-पौधों की नवीन कोमल पत्तियाँ अपने साथ-ही-साथ फल की प्रतीक बौर को लाकर उन्हें सभी प्राणियों के लिए उपयोगी एवं फलदायी बना डालती है उसी प्रकार हमारा जीवन भी पूरे समाज के लिए उपयोगी व फलदायी हो। प्रकृति का कैसा नियम है क पुराने पत्तों को छोडकर पतझड़ के पश्चात पेड़-पौधों पर जब नवीन पत्तियाँ आती है तो अपने साथ फल की बौर भी लाती है। मानो ये कह रही हो कि पुरानी बात समाप्त हुई अब नया संदेश रचेंगे। ''छोड़ो कल की बातें, कल की बात पुरानी, नए दौर में लिखेंगे, मिलकर नई कहानी''। मानव भी इसी भावना से अपनी जीवन शैली का विकास करें, तो यह वसुन्धरा स्वर्ग समान हो जाए। यही संदेश हमारा पावन पर्व होली हमें देता हैं। इसलिए भी होलक शब्द अहाकर होली का प्रयोग किया गया एवं अधजले अन्न को 'होलक' कहते हैं इसीकारण इस पर्व का नाम होलिकोत्सव है। भारतीय ऋषि आविष्कृत वैदिक पर्व प्राणली में होलिकोत्सव फाल्गुन मास में जिस समय आता है उस समय सारी प्रकृति में परिवर्तन की प्रतीति अनुभव होती है। पेड़-पौधों नई-नई पत्तियों से भलीभाँति लद गये होते हैं, आम आदि के पौधों पर बौर आ रहा होता है। फसल में हल्का पीलापन छा जाता है। खेंतों की लहलहाती फसल को देखकर किसान का अंतर्मन भी लहलहाने लगता है। पशु-पक्षी तक अपना रंग बदलने लगते है। पुराने पंख छोड़कर उसी प्रकार नये रंग के पंखों में रंग जाते है, जिस प्रकार पेड़ पौधे पुराने पत्तों का परित्याग कर पुनः नये पत्तों को ग्रहण कर अपना श्रृंगार करके दुल्हन की भाँति सजग खड़े हो जाते हैं। गाय आदि पशु भी अपने रोम डालते है। नये रोम आकर उन्हें भी नया श्रृंगार पहना डालते हैं। और तो और स्वयं मनुष्य की चमड़ी भी 'जाड़े की पिटी हुई' होकर अपना स्वरूप परिवर्तित कर डालती है। कहने का आशय है कि प्रकृति में चहुं ओर परिवर्तन की लहर दौड़ती सी अनुभव होती है। प्रकृति अपना रूप परिवर्तित कर पुनः सजधजकर नव वधु सी लगने लगती है। इसी समय किसान अपने खेत पर षाढ़ी की फसल-गेहूँ, जौ, चना व मटर आदि की अधपकी फसल को भूनकर खाता हुआ बहुत ही मस्ती का अनुभव करता है। इस अधपके अन्न को भूनकर खाने को वह 'होला' कहता है। इस वैज्ञानिक सत्य को पौराणिक पंडित किसी कथानक से नहीं जोड़ पाये। उन्हें वह होला ही क्यों कहता है? होलिका का भाई कहीं होलक अथवा होला तो नहीं था?

नहीं, ऐसा नहीं है। अपितु संस्कृत में अधपके अन्न को होलक कहते है- तृणाग्निं भ्रष्टार्द्धपक्व शमीधान्यं होलक। होला इति हिंदी भाषा। (शब्द कल्पद्रुम कोष) अर्थात् तिनकों की अग्नि में भूने हुए अधपके शमीधान्य फली वाले अन्न को 'होलक' कहते हैं जिसे हिंदी में होला कहते है। 'भाव प्रकाश' ग्रन्थ के अनुसारः- अर्द्धपक्वशमी धान्यै स्तृणा भ्रष्टैश्च होलकः होलकोऽल्पानिलो मेदकाल दोषश्रमा यहः भवेदभो होलको यस्य तत्तदगुणो भवेतः। अर्थात तिनको की अग्नि में भुने हुए (अधपके) शमी-धान्य (फली वाले अन्न) को होलक कहते है यह होला स्वल्प वात है। यह मेद, कफ और थकान के दोषों को शमन करता है अर्थात उन्हें समाप्त करता है। जिस-जिस अन्न का होला होता है उसमें उसी-उसी अन्न का गुण होता है। बसन्त ऋतु में नए अन्न से (येष्ट) यज्ञ करते है इसलिए इस पर्व का नाम बासन्ती नव सस्येष्टि है। 'होलक' का यह स्वास्थ्यवर्धक व सुहावना मौसम ही होलिका का जनक है। आप

हे आत्मन! ख्याति, पूजा, लाभ, पद, प्रतिष्ठा अथवा अपने नाम की प्रसिद्धि के लिए लिखा गया लेख पतन का ही कारण होता है, उससे उत्थान नहीं होता।

प्रतिवर्ष होली जलाते हो, उसमें 'आखत' डालते हो, जो आखत है वो 'अक्षत' का अपभ्रंश रूप है, अक्षत चावल को कहते है। अवधी भाषा में आखत (अक्षत) आहुति को कहते है। आहुति चाहे चावल की हो अथवा गेहूँ व जौ की बाल की जो यह सब यज्ञ की ही प्रक्रिया है क्योंकि यज्ञ में स्विष्टकृत आहुति चावल अथवा गेहूँ के बने अन्न से दी जाती है। इसी प्रकार जो आप जल के द्वारा होली की परिक्रमा करते हैं वह क्रिया भी यज्ञ में जल प्रसेचन की प्रक्रिया है। जो यज्ञमान के द्वारा सम्पन्न की जाती है। पूर्वकाल में भारतवर्ष में नव सस्येष्टि यज्ञ सामूहिक रूप से किए जाते थे यह यज्ञ शरद ऋतु की पूर्णिमा की अमावस्या व ग्रीष्म ऋतु की पूर्णिमा को लिए जाते थे। चारो वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र) परस्पर मिलकर इस होली रूपी विशाल यज्ञ को सम्पन्न करते थे और भी एक कारण इसके पीछे वह था कि प्राचीन आर्य लोग अग्निहोत्र के द्वारा वायुशुद्धि तथा आयोग्य प्राप्त किया करते थे। वैसे तो भारत में प्रत्येक कार्य करने से पूर्व हवन किया जाता है, किन्तु विशेषरूप से ऋतु परिवर्तन (ऋतु-सन्धि) के समय बृहद यज्ञों का प्राचीनकाल से ही प्रचलन हो रहा है। इसका कारण यह है कि ऋतु-सन्धि अनेक रोग उत्पन्न करती है। इस व्याधियों का निवारण भैषज्य (औषध) यज्ञों के द्वारा होता है। शतपथब्राह्मण में इसकी पुष्टि की गई है-भैषज्यज्ञा वा एते। ऋतुसन्धिषु व्याधिर्जायते तस्मादृतुसन्धिषु प्रयुज्यते।। ''ये भैषज्य यज्ञ कहलाते हैं। ऋतुओं की सन्धि में व्याधियाँ उत्पन्न होती है, इसलिए इनका प्रयोग ऋतु-सन्धि में होता है।'' भारतीय घरों में नया अन्न अग्नि में अर्तित किये बिना प्रयोग में नहीं लाया जाता था। प्रत्येक ऋतु में उस ऋतु के पदार्थों द्वारा यज्ञ करने की प्रथा रही है। सम्भवत: विशेष मौसम में उत्पन्न होने वाले पदार्थ उस समय के रोगों को दूर करने में अधिक उपयोगी होंगे इसलिए उनके निवारण के लिए यह यज्ञ किये जाते थे, यह होली हेमन्त और बसन्त ऋतु का योग है रोग निवारण के लिए यज्ञ ही सर्वोत्तम साधन है।

प्रिय सज्जनों! अब आप होली के वास्तविक स्वरूप व सत्य सनातन वैदिक परम्परा के अनुसार होली नया अन्न का प्रतीक है। यह समझ ही गए होंगे। अत: परमात्मा के द्वारा प्रदत्त बुद्धि का प्रयोग करें व सत्य-असत्य का निर्णय करके हिन्दुओं की अपनी प्राचीन वैदिक परमपरा के अनुसार बृहद् सामूहिक यज्ञों द्वारा होलिकोत्सव को सार्थक करें।

स्वाइन फ्लू महामारी निवारण भेषज-या श्रृंखला

ईश्वर दयाल माथुर सिद्धान्त भास्कर

बीते वर्ष 2012 के मध्य से ही स्वाईन फ्लू महामारी से पीड़ित लोगों की संख्या बढ़ने लगी है। फलत: इससे होने वाली मृत्यु दर भी बढ़ोतरी पर है। विशेषत: राजस्थान प्रदेश के आँकड़े चौकाने वाले है। राज्य की राजधानी जयपुर में भी इसकी दस्तक होने से राज्य सरकार के प्रयासों के समान्तर संस्थाएँ भी इस महामारी के मुकाबले के लिए आ डटी है।

मानव कल्याण के प्रतिदो सदियो से समर्पित संस्था आर्य समाज ने इस बीमारी से मुकाबल के लिए यज्ञों के आयोजन को माध्यम बनाने का विनिश्य किया। तद्नुसार दिनांक 15.02.2013 को जयपुर नगर के कृष्णपोल आर्य समाज में नगर के सभी आर्य समाजों के प्रतिनिधियों की बैठक में स्वाइन फ्लू निवारक यज्ञ- आयोजन समिति का पुनर्गठन किया गया। इस समिति के संयोजक सर्वसम्मति से सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् (राज.) के प्रदेशाध्यक्ष यशपाल यश मनोनीत हुए। इस निर्णय के अनुसार जयपुर नगर में विभिन्न स्थानों पर स्वाईन फ्लू निवारक भेषज यज्ञों के आयोजन निष्पादित होने लगे। प्रथम चरण का भेषज यज्ञ महिला आर्य समाज कृष्णपोल बाजार के आमंत्रण पर दिनांक 15.02.2013 को कृष्णपोल आर्य समाज के भवन में सम्पन्न हुआ।

अनन्तर जयपुर नगर में स्वाईन फ्लू निवारक भेषज यज्ञ दिनांक 17.02.2013 को आर्य समाज जयपुर (दक्षिण) हिंडौन हाउस, 19 फरवरी 2013 को राजस्थान विश्व विद्यालय परिसर के वर्ल्ड यूनिवर्सिटी सर्विसेज हॉस्टल में 28 फरवरी 2013 को सीनियर सिटिजन फोरम एस.एफ.एस., मानसरोवर में, दिनांक 03.03.2013 को महेश नगर के जेडीए पार्क में एव 05.03.2013 को केसर इंटरनेशनल एकेडमी के प्रांगण में सम्पन्न हुए। इन भेषज यज्ञों की वैदिक प्रक्रिया से अनुकूल सन्देश जाने के कारण नगर के अन्य क्षेत्रों के निवासी भी आयोजन के लिए अनुरोध होने लगे है।

आहुति, वैदिक ऋचाओं के वाचन के साथ 25 से अधिक औषधियुक्त सामग्री के मिश्रण में आक, नीम और सफेदा (यूक्लीप्ट्स) के पुष्प के साथ दी जाती है। उल्लेखनीय है कि इन औषधियों का चयन राष्ट्रीय आयुर्वेद संसीान जयपुर के डॉ. भेषज विशेषज्ञों की अभिशंसा पर ही स्वाइन फ्लू निवारक माना गया, जिसके अनुकूल प्रभाव भी परिलक्षित हुए।

सन् 2009 में भी इस महामारी के प्रकोप से निपटने के लिए नगर में श्रृंखलाबंद्ध भेषजीय यज्ञ आयोजित हुए। 19 दिसम्बर 2009 को मानसरोवर के परशुराम जनोपयोगी भवन में आयोजित भेषज यज्ञ के दौरान MNIT(मालवीय राष्ट्रीय प्रोद्योगिकी संस्थान) के पर्यावरण अभियांत्रिकी विभाग की शोद्यार्थी टीम ने यंत्रों द्वारा यज्ञ स्थल पर फंगस काउण्ट यज्ञ के निकट न्यूनतम रहा और दूरस्थ होते जाने पर बढ़ता गया। अत: प्राणित हुआ कि औषधियुक्त सामग्री की आहुतियों से भेदक शक्ति प्रबल हो जाती है।

नेताजी सुभाषचन्द बोस जयंती मनाई

ईश्वर लाल माथुर

गोपालपुरा बाईपास स्थित हिण्डौन हाउस में व सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् (राजस्थान) के तत्वावधान में गत 23 जनवरी को महान बलिदानी, स्वाधीनता सेनानी सुभाषचन्द्र बोस की जयन्ती मनाई गई।

कार्यक्रम का प्रारंभ संकल्प यज्ञ से हुआ। अग्निहोत्र प्रक्रिया के प्रश्चात सभी उपस्थितजनों ने स्वाधीनता की रक्षा और सुराज्य की स्थापना का व्रत लिया। गोष्ठी एवं परिचर्चा में सार्वदैशिक आर्य युवक परिषद् (राज.) प्रदेशाध्यक्ष यशपाल यश ने नेताजी के बलिदान पक्ष को उजागर किया। ईश्वरदयाल माथुर ने नेताजी के आह्वान ''तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा।'' को प्रत्येक देशवासी के खून और आजादी का अटूट रिश्ता बताया, समाजसेवी हरिचरण सिंहल, डॉ. प्रमोद पाल, डी.के. गुप्ता एवं श्रीमती मधुरानी यश ने भी परिचर्चा में भाग लिया।

हे आत्मन्! स्वयं का लेखन, जन समुदाय में प्रदर्शन के लिए नहीं, आत्म दर्शन के लिए हो। भले ही उस लेख का कोई प्रदर्शन कर दे किन्तु तुम आत्मदर्शन का ही भाव रखो।

श्री रामजीलाल आर्य कन्या छात्रावास समिति एवं आर्य कन्या विद्यालय समिति के तत्वावधान

18 वॉं रोग निदान शिविर सम्पन्न

सम्पादक

दिनांक 24 फरवरी 2013, रविवार को प्रात: 9.00 बजे वैदिक विद्या मंदिर, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में श्री रामजीलाल आर्य कन्या छात्रावास समिति एवं आर्य कन्या विद्यालय समिति के तत्वावधान में हरीश हॉस्पिटल के सौजन्य से 18वॉं रोग निदान शिविर उत्साहपूर्वक आयोजित किया गया, जिसमें लगभग 550 रोगियों को नि:शुल्क परामर्श दिया गया। समारोह की अध्यक्षता समिति प्रधान श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता ने की।

अतिथि चिकित्सकों का विद्यालय द्वार पर अशोक आर्य, उपप्रधान, प्रदीप आर्य, मंत्री सुरेश दर्गन, संयुक्त मंत्री कमला शर्मा, निदेशक, प्रद्युम्न गर्ग, कोषाध्यक्ष तथा समिति सदस्यों ने पुष्पमाला एवं पुष्पगुच्छ देकर विद्यालय बैण्ड की अगुवाई में स्वागत किया। विद्यालयी छात्रा शैलजा मीणा ने वैदिक परम्परानुसार तिलक लगाकर अतिथि चिकित्सकों का स्वागत किया।

शिविर का प्रारम्भ प्रात: 9.00 बजे यज्ञ एवं हवन से हुआ, जिसमें अतिथि चिकित्सकों ने पूर्णाहुति दी। आमजन को शिविर में रोगों के कारण एवं उपचार से संबंधित जानकारी देने के लिए विद्यालयी छात्राओं द्वारा चार्ट, मॉडल एवं अन्य उपकरणों से सुसज्जित प्रदर्शनी लगाई गई जिसका उद्घाटन पदमश्री डॉ. गणेश के. मणि एवं डॉ. एस. के. गुप्ता ने रिबन काटकर किया। सभी चिकित्सकों, अतिथियों तथा रोगियों ने छात्राओं के प्रदर्शन से प्रभावित होकर छात्राओं की प्रशंसा की। बीसूका प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ. करणसिंह यादव ने शिविर का अवलोकन किया और ऐसे शिविरों की वर्तमान में उपयोगिता बताई।

नेचर फ्रेश ऑर्गेनिक फूड स्टोर द्वारा मिलावट रहित, यूरिया रहित, पेस्टीसाइड रहित, पौष्टिक एवं स्वास्थ्यवर्धक खाद्य पदार्थों का दैनिक जीवन में महत्व एवं उपयोग बताया गया जिससे आमजन बीमारियों से दूर रहे। एल.सी.डी. प्रोजेक्टर द्वारा रोगों का कारण तथा निवारण दर्शाया गया। प्रदर्शनी के साथ ही साथ लगभग 1000 रोगियों का बी.पी. टैस्ट, लम्बाई, वजन, डाईट चार्ट, ब्लड ग्रुप, बी.एम.डी., पी.एफ.टी., कलर डोप्लर, मेडिक्लेम बीमा आदि की नि:शुल्क सुविधा उपलब्ध करवाई गई।

18वें रोग निदान शिविर में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हृदय रोग से संबंधित पद्मश्री डॉ. गणेश के. मणि-सीनियर कार्डियक सर्जन, इन्द्रप्रस्थ अपोलो हॉस्पिटल, नई दिल्ली, (कर्नल) डॉ. जे.के. शर्मा-डी.एम.पार्क हॉस्पिटल नई दिल्ली, डॉ. एस.के. चौटानी-कार्डियक फिजिशियन, नई दिल्ली, डॉ. प्रमोद शर्मा-सीनियर कार्डियक, नई दिल्ली, डॉ. दीपेश अग्रवाल-डी.एम., महात्मा गाँधी हॉस्पिटल, जयपुर, डॉ. शक्ति सिंह-एम.डी., डिप्लोमा कार्डियोलोजी, अलवर, डॉ. सतीश माथुर-थायराइड एवं मधुमेह स्पेशलिस्ट, नई दिल्ली, डॉ. कपिल अग्रवाल-डी.एम. (ऑनको रेडियोथेरेपिस्ट), पार्क हॉस्पिटल नई दिल्ली, डॉ. अमित खण्डेलवाल-डी.एम., (न्यूरोलोजी), अलवर, डॉ. ऋतु भुटानी-एम.डी.(ऑनको रेडियोथेरेपिस्ट), पार्क हॉस्पिटल, नई दिल्ली-डी. धवल गोयल- दंत एवं मुखरोग विशेषज्ञ, जयपुर, डॉ. नेहा गुप्ता- फेशियल सर्जन, एस.एम.एस. हॉस्पिटल जयपुर, डॉ. मानव गार्गी-ई.एन.टी. स्पेशलिस्ट-जैन.एन.टी. हॉस्पिटल, जयपुर, जयपुर डॉ. सौरभ कालिया-एस.सी.एच.(जी.आई.सर्जरी) महात्मा गाँधी हॉस्पिटल, जयपुर, डॉ. पवन रावल डी.एम. गेस्ट्रोलोजिस्ट, पार्क हॉस्पिटल, नई दिल्ली, डॉ. हरीश गुप्ता-एम.डी. सिनियर फिजीशियन हरीश हॉस्पिटल, अलवर द्वारा हृदय, थायराइड, मधुमेह, मस्तिष्क रोग, दंत, नाक, कान एवं गला, कैंसर, गुर्दा, लिवर एवं आंत्र रोग से संबंधित नि:शुल्क परामर्श दिया गया।

इस अवसर पर कै. रघुनाथ सिंह, डॉ. राजेन्द्र कुमार आर्य, वेद प्रकाश शर्मा, शैलेन्द्र भार्गव, रामनारायण सैनी, हेमराज कल्ला, प्रमोद आर्य, सौरभ आर्य, डॉ. गोपाल गुप्ता, डॉ. सुरेश कुमार शर्मा, धर्मवीर अग्रवाल, न्यास सचिव-इन्द्रसिंह सोलंकी, आयकर आयुक्त-विशनसिंह, छज्जूराम आमेरिया, च्यवन भार्गव, मोहन देवी, मोहिनी गुप्ता, इन्द्रा आर्य, सुमन आर्य, संजू गर्ग आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए।

आर्य समाज मन्दिर बजाजा बाजार, अलवर में नवसम्वत्सर पर विशेष कार्यक्रम

बड़े हर्ष के साथ सूचित किया जाता है कि नवसम्वतसर के शुभ अवसर पर आर्य समाज बजाजा बाजार में अलवर की समस्त कार्य समाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं के सहयोग से आर्य समाज स्थापना दिवस एवं वार्षिकोत्सव जिले की सर्वश्रेष्ठ आर्य बालिका शिक्षण संस्थान के प्रधान श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता की अध्यक्षता में 11 अप्रैल, 2013, बृहस्पतिवार को मनाया जा रहा है। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के महामंत्री श्री अमर मुनि जी समारोह के मुख्य अतिथि, आर्य समाज दयानन्द मार्ग के प्रधान एवं नगर विकास न्यास के अध्यक्ष श्री प्रदीप आर्य विशिष्ट अतिथि होंगे।

इस अवसर पर उच्चकोटि के वैदिक विद्वान आर्य शिरोमणि एवं वेद अधिष्ठाता श्री विनोदीलाल दीक्षित, जिला सभा के प्रधान श्री जगदीश आर्य, मंत्री श्री हरिपाल शास्त्री, कोषाध्यक्ष श्री धर्मसिंह आर्य, आर्यवीर दल के प्रान्तीय संचालक श्री सत्यवीर आर्य प्रधार रहें है।

कार्यक्रम दिनांक : 11 अप्रैल, 2013, बृहस्पतिवार

- ❖ विशेष यज्ञ - प्रात: 7.30 बजे से 9.00 बजे तक
- ❖ ओ३म ध्वजारोहण - प्रात: 9.30 बजे
- ❖ ईश वन्दना (आर्य बालिकाओं द्वारा)- प्रात: 9.30 बजे
- ❖ भजन एवं वेदोपदेश - प्रात: 9.45 से 12.00 बजे तक

जिला सभा कार्यकारिणी की बैठक

आर्य समाज बजाजा बाजार में आर्य समाज स्थापना दिवस पर जिलासभा कार्यकारिणी की बैठक 11 अप्रैल 2013 को मध्याह्न 2 बजे से सायं 4 बजे तक आयोजित की जा रही है। बैठक में सभी कार्यकारिणी सदस्य आमंत्रित है।

-:: विनीत ::-

जगदीश आर्य	धर्मसिंह आर्य	हरिपाल शास्त्री
प्रधान	कोषाध्यक्ष	मंत्री

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, अलवर

हे आत्मन्! अपने मन को अशुभ विचारों से रोकने के लिए असद् विकल्पों का शमन करने के लिए, आत्मतत्व को लखते हुए लिखो।

सृष्टि संवत-1960853113वाँ

सृष्टि संवत के एक अरब छियानवे करोड़ साठ लाख तरेपन हजार एक सौ तेरहवें ईश्वरीय नव-वर्ष के शुभ एवं परम पावन अवसर पर समस्त मानव जाति के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हुई हार्दिक शुभकामनाऐं प्रेषित करती हूँ। परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करती हूँ कि यह नव-संवतसर प्राणी मात्र के लिये मंगलमय, कल्याणकारी, सद्बुद्धि, सद्ज्ञान और विवेक प्रदान करने वाला तथा आध्यात्मिक उन्नति कराने वाला हो। क्योंकि उड़ने के लिये दोनों पंखों (भौतिक व आध्यात्मिक) का होना अनिवार्य है। एक पंख के सहारे ज्यादा देर तथा दूर तक नहीं उड़ा जा सकता। भौतिक ज्ञान की एक सीमा है आध्यात्मिक ज्ञान अनन्त है।

सृष्टि की रचना करना, धारणा (चलाना) करना फिर समय आने पर प्रलय करना, यह सब व्यवस्था उस सर्व सामर्थ्यवान पूर्ण ज्ञानवान परमेश्वर की ही है जो प्रवाह से अनादि है। परमेश्वर अपने सामर्थ्य को सार्थक करने के तथा जीवों को उनके कर्मों के अनुसार फल देने के लिये सृष्टि की रचना करता है।

काल गणना सृष्टि का कुल कार्य काल ''चार अरब बत्तीस करोड़ का होता है इसे ब्रह्मदिन'' कहते है। इतना ही काल प्रलय का होता है जिसे ''ब्रह्मरात्रि'' कहते है। सृष्टि काल एक हजार चतुर्युगियों में विभाजित रहता है। इसमें से छः चतुर्युगियों सृष्टि का निर्माण काल तथा 994 चतुर्युगियां मानव की भोग अवस्था मानी जाती है। एक चतुर्युगी में चार युग होते है। सतयुग में 1728000 वर्ष, त्रेतायु में 1296000 वर्ष, द्वारपयुग में 864000 वर्ष व कलयुग में 432000 वर्ष, कुल वर्ष 4320000 वर्ष।

अतः एक हजार चतुर्युगियों के बीतने पर ही प्रलय काल का प्रारम्भ होता है। यह काल घोर अन्धकार का होता है। यह शाश्वत सत्य है, ईश्वर का अटल नियम है कि इस कार्यकाल के पूर्व या पश्चात न तो सृष्टि की रचना होती है न ही प्रलय चाहे कितनी भी भविष्यवाणियां ज्योतिषी करें या वैज्ञानिक।

सृष्टि की रचना-जिस प्रकार सूर्य उदय से पूर्व उषाकाल में मनुष्य एवं पशु-पक्षी आदि सब प्राणियों में जीवन की हलचल प्रारंभ हो जाती है ठीक उसी प्रकार प्रथम तीन चतुर्युगियों में परमात्मा सृष्टि रचना का इक्षण करते है तथा परमाणुओं में सृजनात्मक गति उत्पन्न होती है। सर्वप्रथम आकाश की उत्पत्ति के साथ आकाश में ओ३म शब्द गुजायमान होता है जिसे केवल मुक्त आत्माएं ही सुन सकती है।

आकाश दो प्रकार का होता है जिसे अन्तरिक्ष भी कहते है जो प्रलयकाल में भी नष्ट नहीं होता तथा खाली स्थान बचा होता है ताकि प्रकृति और परमाणु वहां ठहर सके। सर्व प्रथम पंचभूत तत्वों (आकश, पृथ्वी, वायु, अग्नि व जल) की उत्पत्ति के साथ एक विशालकाय अण्डे का निर्माण होता है। इसी के गर्भ में सूर्य, पृथ्वी, चन्द्रमा, सितारे आदि लोक-लोकान्तरों का निर्माण होता है। यह अण्डा तीव्र गति से घूमता हुआ पक कर फट जाता है। इसमें निर्मित सभी लोक-लोकान्तर तीव्र गति से घूमते हुए अपनी अपनी कक्षाओं में स्थिर हो घूमने लगते है। इन्हीं के जन्म के साथ सृष्टि संवत का शुभारंभ होता है।

प्रांरभ में पृथ्वी आग का गोला होती है। लाखों वर्षों तक लगातार अतिवृष्टि होने के कारण पृथ्वी ठण्डी होने लगती है। कहीं सुकड कर पहाड़ बन जाते है कहीं पृथ्वी धंस कर समुद्र बन जाते है। समुद्र के बाद ही दिन रात पक्ष-मास व वर्ष आदि बनने प्रांरभ होते है। धीरे धीरे समुद्री पौधे तथा जीव उत्पन्न होने लगते है। पृथ्वी पर सभी प्रकार के जीव व विभिन्न प्रकार की वनस्पतियां उत्पन्न हो जाती है। सृष्टि की संधिवेला के जब आठ लाख चौसठ हजार वर्ष शेष रह जाते है तब परमात्मा पृथ्वी पर अपनी सर्वोत्तम कृति मनुष्य को उत्पन्न करता है। इसी दिन ही वेदों के अलौकिक ज्ञान को चार श्रेष्ठतम (अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा) ऋषियों के माध्यम से क्रमशः ऋग्वेद, सामवेद तथा अर्थर्ववेद का दिया ताकि मानव वेदानुसार जीवन यापन कर ईश्वर की सर्वोत्तम कृति बनी रहे। आदि सृष्टि के समय यदि ईश्वर ने वेद ज्ञान मानव को नहीं दिया होता तो आज किसी भी मत का अस्तित्व नहीं होता। आज से ही मानव तथा वेदोत्पत्ति संवत भी माना जाता है।

यह संवत्सर किसी विशेष जाति देश धर्म, सभ्यता व संस्कृति से सबंधित नहीं वरना समस्त मानव जाति का नववर्ष है क्योंकि मानव की उत्पत्ति आदि सृष्टि त्रिविष्टिय (तिब्बत) में हुई जब जनसंख्या बढ़ गयी तो लोग आर्यवर्त में आ कर बस गये जो आज विश्व में भारतवर्ष के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ से लोग अन्य भू भागों में जा कर बस गये जो विभिन्न देशों के नाम से जाने जाते है। आदि काल से हम सब के पूर्वज इसी ईश्वरीय नववर्ष को मनाते रहे है तथा इसी के आधार पर ही काल गणना चली आ रही है। जिसमें कभी भी कोई भूल या गलती नहीं हुई। हम सब के पूर्वज उस परमपिता परमात्मा की सन्तान थे अर्थात सब के पूर्वज एक थे। मानव जाति एक है अनेक नहीं।

ऐसा माना जाता है कि प्रलय के अन्त में सर्वप्रथम सूर्य उदय होता है। जब सूर्य उदय हुआ तो ऋषियों ने इसे पहला होरा माना तथा सप्ताह के प्रथम दिन का नाम रविवार अर्थात सूर्य का दिन रखा। भारतीय ज्योतिष गणित के अनुसार प्रथम पूर्णिमा को चित्रा नक्षत्र पड़ा इसलिये नववर्ष के प्रथम मास का नाम चैत्र मास पड़ा। मनुष्य की प्रथम उत्पत्ति के दिन का नाम चैत्र मास का शुक्ल पक्ष प्रथम प्रतिपदा रख गया। गौपथ ब्राह्मण में लिखा है कि पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में पूर्व संवत्सर कीसमाप्ति तथा उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में नववर्ष का प्रारंभ होता है। बसन्त ऋतु वर्ष की अन्तिम ऋतु है तथा होली पर्व वर्ष का अंतिम पर्व है। इस पावन पर्व के दिन संकल्प करें कि प्रतिवर्ष इस नववर्ष को आदिकाल से चली आ रही पद्धति से मनायेंगे-महायज्ञ रचा कर। यज्ञ से जनमानस को अत्याधिक ऊर्जा मिलती है। मानवीय गुण का स्वतः विकास होता रहता है। घृत तथा सुगन्धित सामग्री की आहुतियां दे कर सारे वातावरण को गुगन्धमयी बनायें वेद की ऋचाओं से सारा आकाश गूंज उठे और सब मिलकर कहें नया वर्ष शुभ हो मंगलमय हो। सम्पूर्ण विश्व तभी जगेगा वह है आदि सृष्टि, मानव व वेद उत्पत्ति का ईश्वरीय नव संवत्सर जिसे समस्त मानव जाति के पूर्व सदा से मनाते आ रहे है और हम सब भी मनाते है।

श्रीमती अरूणा सतीजा

आत्मा के बारे में लिखना और आत्मा को लखना इन दोनों में उतना ही अंतर है जितना कि मानचित्र में बने नदी, पर्वत, समुद्र, पुष्प, वाटिका, वृक्ष, तिर्चचों में तथा वास्वविक नदी, पर्वत, समुद्र, पुष्प, वाटिका, वृक्ष, विर्यचों में होता है।

आर्य समाज मन्दिर तिजारा (अवलर) द्वारा विभिन्न कार्यक्रम

बोध दिवस पर्व धूम-धाम से मनाया

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का ''बोध दिवस'' पर्व धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर आर्य समाज मन्दिर, तिजारा में प्रातः 7.30 बजे से देव यज्ञ किया गया। यज्ञ के पश्चात महर्षि दयानन्द सरस्वती (मूल शंकर) द्वारा महाशिवरात्रि पर किए गये उपवास व सच्चे शिव के दर्शन की ललक की कथा का श्री रतनलाल आर्य द्वारा विस्तृत प्रकाश डाला गया। श्री कंचनसिंह आर्य एवं श्री महेन्द्र सिंह आर्य मंत्री ने वेद एवं आर्यसमाज के नियमों की संक्षिप्त व्याख्या की। श्री राधेश्याम की धानका के दयानन्द के जीवन चरित्र से संबंधित भजन सुनाया। श्री रामावतार आर्य प्रधान ने महर्षि के बरेली में हुए व्याख्यान एवं ''श्रद्धानन्द'' के जीवन में आये परिवर्तन पर प्रकाश डाला। उन्होंने एक प्रयाण गीत प्रस्तुत किया। ''दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे दयानन्द का काम पूरा करेंगे।''

अंत में सभी उपस्थित सज्जनों को धन्यवाद देते हुए शांति पाठ के साथ कार्यक्रम को विश्राम दिया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती उत्सव

दिनांक 7 मार्च 2013 तदनुसार फाल्गुन कृष्ण दशमी को आर्य समाज मन्दिर परिसर में प्रातः 7.30 बजे से 10 बजे तक यज्ञ एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती के उपलक्ष्य में विद्वानों द्वारा विचार व्यक्त किये गये। तत्पश्चात प्रातः 10 बजे से मध्याह्न 1 बजे तक सैनी माध्यमिक विद्यालय, तिजारा में 'महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती समारोह' उत्सव के रूप में मनाई गई।

श्री रामावतार सोनी प्रधान ने महर्षि के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालते हुए उनके द्वारा किये गए वेद प्रचार पाखण्ड खण्डन तथा सत्यार्थ प्रकाश के उद्धरण देकर प्रभावशाली प्रवचन दिया गया।

आचार्य सत्यप्रिय मुनि ने बालकों को गायत्री मंत्र की महिमा एवं अर्थ बताते हुए गायत्री मंत्र का जाप नित्य करने की प्रेरणा दी।

श्री रतनलाल आर्य ने पांतजलि योग शास्त्र के यम-नियमों की विस्तार से व्याख्या करते हुए उनके पालन के लिए प्रेरणा दी। श्री जयसिंह आर्य ने दयानन्द सामाजिक सुधारों पर विचार व्यक्त किए। उन्होंने नारी शिक्षा अस्पृश्यता निवारण तथा स्वतंत्रता संग्राम 1857 में महर्षि की भूमिका आदि पर विस्तृत प्रकाश डाला

विद्यालय के प्रधानाचार्य ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। आर्य समाज की ओर से विद्यालय के पुस्तकालय के लिए दो ''सत्यार्थ प्रकाश'' भेंद किये गए।

आर्यकन्या विद्यालय समिति एवं श्रीरामजीलाल आर्य कन्या छात्रावास द्वारा

पर्यावरण शुद्धि एवं विश्वशांति हेतु 51 कुण्डीय महायज्ञ

आपको जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि आर्य कन्या विद्यालय समिति, श्री रामजीलाल आर्य कन्या छात्रावास समिति, अलवर जिले के समस्त आर्य समाज, बैंक ऑफ बड़ौदा एवं जनसहयोग से पर्यावरण शुद्धि एवं विश्वशांति हेतु 51 कुण्डीय यजुर्वेद शतक द्वारा महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है जिसके ब्रह्मा पंडित हरिप्रसाद व्याकरणाचार्य, नई दिल्ली होंगे। गुरूकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा वेद पाठ किया जाएगा।

इस अवसर पर आचार्य बलदेवजी, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा; स्वामी प्रणवानन्दजी, गुरूकुल गौतम नगर; स्वामी सुमेधानन्दजी सरस्वती, वैदिक आश्रम पिपराली; आचार्य देवव्रतजी, संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल; श्री आनन्द कुमारजी, कार्यकारी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली; श्री सत्यव्रत सामवेदीजी, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, श्री अमरमुनिजी, महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान एवं श्री विजय शर्मा, प्रधान, आर्य समाज, भीलवाड़ा, राजस्थान आदि पधार रहे हैं।

हमारे लिए गौरव का विषय है कि इस समारोह में माननीय श्री सज्जनसिंह कोठारी लोकायुक्त राजस्थान का अभिनन्दन किया जाएगा।

आप सभी से निवेदन है कि सपरिवार पधार कर धर्मलाभ उठावें।

कार्यक्रम

यज्ञ –	प्रातः 7:30 बजे से 10:00 बजे तक
सत्यार्थ प्रकाश भेंट –	यज्ञोपरान्त
भजन प्रवचन एवं अभिनन्दन –	प्रातः 10:30 बजे से 12:30 बजे तक
ऋषि लंगर–	दोपहर 12:30 बजे से

प्रदीप आर्य

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / FN-51 / 2011 - 2013 / आर. एन. आई नं. 10471/60

शुभकामना सन्देश

राजस्थान उच्चन्यायालय के पूर्व न्यायाधीश श्री सज्जनसिंह जी कोठारी को राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत, मुख्य न्यायाधीश श्री अमिताव रॉय, भारतीय जनता पार्टी की प्रदेशाध्यक्ष श्रीमती वसुन्धरा राजे व राजस्थान के मंत्रीगणों की उपस्थिति में राजस्थान की राज्यपाल श्रीमती मार्गेट अल्वा ने राजस्थान के लोकायुक्त पद की शपथ ग्रहण कराई।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान एवं आर्य मार्तण्ड परिवार की ओर से आदरणीय कोठारी जी को हार्दिक शुभकामनाऐं प्रस्तुत करते है। - अमरमुनि

आर्य समाज डोहरिया का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज डोहरिया का वार्षिक उत्सव दिनांक 29 मार्च 2013 से 31 मार्च 2013 तक हुआ था। भजन एवं उपदेश के लिय पं. अमरसिंह जी विद्यावाचस्पति ब्यावर वाले पधारे थे।

चतुर्वेद शतकम् यज्ञ प्रातः 8 बजे से 10 बजे तक हुआ। भजन एवं उपदेश 10 बजे से 12 बजे, सायंकालीन यज्ञ 4 बजे से 5.30 तक, भोजन एवं विश्राम सायं 6 बजे से, रात्रिकालीन कार्यक्रम (भजन एवं उपदेश) 8 बजे से 10 बजे तक ग्राम-राजपुरा में हुआ। दिनांक 29 मार्च 2013 को रात्रि 10 बजे से सत्यार्थ प्रकाश वितरण कार्य राजपुरा में हुआ।

मेरे पास वक्त नहीं है
नफरत करने का उन लोगों से
जो मुझसे नफरत करते हैं
क्योंकि
मैं व्यस्त हूँ उन लोगों में
जो मुझसे प्यार करते हैं.....

आर्य समाज प्रचार समिति अलवर द्वारा यज्ञ एवं वेद प्रचार का कार्यक्रम सम्पन्न

रविवार दिनांक 31 मार्च 2013 को सायं 4.30 बजे से 6.30 बजे तक स्कीम नं. 10, जैन मन्दिर रोड़, इलाहाबाद बैंक के सामने वाले पार्क में यज्ञ एवं वेद प्रचार का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस अवसर पर श्री पं. शिव कुमार कौशिक एवं श्री रघुवीर आर्य ने यज्ञ सम्पन्न कराया। श्री कौशिक जी ने यज्ञ के विषय पर प्रकाश डाला।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के महामंत्री पं. अमरमुनि ने वेद सब सत्यविद्याओं की पुस्तक है, पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि समाज में जब तक वेद के अनुरूप आचरण नहीं होगा तब तक मानव मात्र को शान्ति नहीं मिल सकती। वेद ही केवल हमको सही रास्ता दिखा सकता है। इस भौतिकवादी युग में जिस प्रकार हम पाश्चात्य संस्कृति को अपनाते चले जा रहे है इसी से हमारे समाज में अनेक प्रकार के दुःख एवं कष्ट हो रहे है। इनका एक मात्र इलाज यज्ञ संस्कृति है जब तक हम इसे नहीं अपनायेंगे तब तक सुधार संभव नहीं।

यह कार्यक्रम कै. रघुनाथ सिंह जी उप प्रधान आर्य समाज स्वामी दयानंद मार्ग के तत्वावधान में आयोजित किया गया।

इस अवसर पर श्री धर्मवीर आर्य प्रचार मंत्री, श्रीमती ईश्वरी देवी, श्री सत्यपाल जी आर्य, एवं कॉलोनी के अनेक पुरुष एवं महिलाओं ने भाग लिया। विदित हो कि वेद प्रचार समिति द्वारा यह कार्यक्रम विभिन्न पार्कों में प्रतिमाह के अंतिम रविवार को आयोजित किया जाता है।

धर्मवीर आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर द्वा... ...त।
सम्पादक एवं प्रकाशक अमरसिंह आर्य, मंत्री- आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

प्रेषक :
सम्पादक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर - 302004

प्रेषित

विशेष – आर्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों मे व्यक्त विचार लेखकों के अपने है। उनसे संम्पादक की सह... आवश्यक नहीं है।